तृतीयः पाठः

सूक्ति-सुधा

(सूक्तियों का अमृत)

(संकलित)

[प्रस्तुत पाठ में सूक्तियों का संग्रह किया गया है। सूक्ति का तात्पर्य है सु + उक्ति अर्थात् सुन्दर कथन। जिस प्रकार सुन्दर बातें बोलने एवं सुननेवाले दोनों की भलाई के लिए होती हैं, उसी प्रकार काव्यों में लिखी हुई सूक्तियाँ आनन्द प्रदान करने के साथ ही जीवन में नैतिकता और सामाजिकता का सृजन कर मनुष्य को अमृतत्व की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।]

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।
तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम्।।1।।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाण-खण्डेषु रत्न-संज्ञा विधीयते।।2।।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।3।।

श्लोकस्तु श्लोकतां याति यत्र तिष्ठन्ति साधवः।
लकारो लुप्यते तत्र यत्र तिष्ठन्त्यसाधवः।।4।।

अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपिब्रुवन्।
प्राप्नुयाद् बुद्ध्यवज्ञानमपमानञ्च शाश्वतम्।।5।।

वाच्यं श्रद्धासमेतस्य पृच्छतश्च विशेषतः।
प्रोक्तं श्रद्धाविहीनस्याप्यरण्यरुदितोपमम्।।6।।

वसुमतीपतिना नु सरस्वती बलवता रिपुणा न च नीयते।
समविभागहरैर्न विभज्यते विबुधबोधबुधैरपि सेव्यते।।7।।

लक्ष्मीर्न या याचकदुःखहारिणी विद्या न याऽप्यच्युतभक्तिकारिणी।
पुत्रो न यः पण्डितमण्डलाग्रणीः सा नैव सा नैव सा नैव।।8।।

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः।
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्द्धजाः।।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणम् भूषणम्।।9।।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–
   (क) भाषासु ..... सुभाषितम्।
   (ख) पृथिव्यां ..... विधीयते। **(2019AP, AR, 20MO, MP)**
   (ग) लक्ष्मीर्न ..... सा नैव सा नैव।
   (घ) केयूराः ..... मूर्द्धजाः।
   (ङ) श्लोकस्तु ..... तिष्ठन्त्यसाधवः।
   (च) काव्यशास्त्रविनोदेन ..... कलहेन वा। **(2019AU, 20MU)**
   (छ) वाण्येका ..... वाग्भूषणम् भूषणम्। **(2019AT)**
   (ज) वसुमतीपतिना ..... सेव्यते।

2. निम्नांकित सूक्तियों की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए–
   (क) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नम् सुभाषितम्।
   (ख) काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
   (ग) श्लोकस्तु श्लोकतां याति यत्र तिष्ठन्ति साधवः।
   (घ) मूढैः पाषाण-खण्डेषु रत्न-संज्ञा विधीयते। **(2019AS, 20MU)**
   (ङ) लक्ष्मीर्न या याचकदुःखहारिणी।
   (च) क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणम् भूषणम्। **(2020MS)**
   (छ) भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती। **(2019AU)**
   (ज) पुत्रो न यः पण्डितमण्डलाग्रणीः। **(2018 HP)**
   (झ) वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते। **(2020MQ)**
   (ञ) विद्या न याऽप्यच्युत भक्तिकारिणी।

3. निम्नलिखित श्लोकों का संस्कृत में अर्थ लिखिए–
   (क) भाषासु मुख्या ..... सुभाषितम्। **(2019AP, 20MU)**
   (ख) पृथिव्यां ..... विधीयते। **(2018HQ, HR, 19AO)**
   (ग) काव्यशास्त्रविनोदेन ..... कलहेन वा। **(2019AS)**
   (घ) श्लोकस्तु ..... तिष्ठन्त्यसाधवः।
   (ङ) अप्राप्तकालं ..... शाश्वतम्।
   (च) लक्ष्मीर्न या याचकदुःख ..... सा नैव सा नैव।
   (छ) वाण्येका ..... वाग्भूषणम् भूषणम्।
   (ज) केयूराः ..... मूर्द्धजाः। **(2020MR)**

4. इस पाठ में उद्धृत श्लोकों में से अपनी पसन्द के किसी एक श्लोक पर दस वाक्य लिखिए।

5. निम्न शब्दों में विभक्ति और वचन बताइए–
   रत्नानि, धीमताम् , पृच्छतः, पतिना, साधवः।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

इस पाठ से जो सूक्तियाँ आपको विशेष प्रभावित करती हैं, उन्हें कण्ठस्थ करें।